موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 8

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : طارق بدر السنابلي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े- किस्त 8

(क़ब्र के परिक्षण, उसके प्रकोप एवं उपहार पर विश्वास रखना)

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُــولُهُ. (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْــلِمُون). (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَـــاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَــاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَــدِيداً * يُصْــلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए

गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है, हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो, उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, ज्ञात रखो कि अल्लाह तआ़ला अपने विधान में, अपने भाग्य (वितरण करने) में और अपने बदले एवं यातना में सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान है एवं अल्लाह तआ़ला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उसने अपने सृष्टि हेतु एक समय स्थित किया है जिसमें उन्हें उन कर्मों का बदला देगा जिन को अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उन पर अनिवार्य किया, अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थात: क्या तुम्हें यह भ्रम है कि हमने तुम्हें निरर्थक पैदा

किया है एवं यह की तुम हमारी ओर नहीं लौटाए जाओगे?

ए मोमिनो! पश्चात के ७ उपदेशों में प्रलय के दिन में विश्वास रखने हेतु आवश्यकताओं पर चर्चा की गई, जो तुरही फूंकने, सर्वश्रेष्ठ क़यामत के लक्षण, सृष्टि के उठाए जाने, न्याय के मैदान में मनुष्यों के एकत्रित होने, लाभ-व-यातना, जांच पड़ताल, स्वर्ग के उपहार, नरक की विशेषताएं, प्रलय के दिन की कुछ दृष्टियां, एवं प्रलय में प्रदर्शित होने वाले अनुशंसा के प्रकार (जैसी बातों) आधारित पर थीं, एवं आज के उपदेश में हम इन्-शा-अल्लाह

जिस शीर्षक के अंतर्गत चर्चा करेंगे उसका भी संबंध प्रलय के दिवस पर ईमान लाने से है, और वह है: क़ब्र के परिक्षण, उसके प्रकोप एवं उपहार पर विश्वास रखना।

ए मुसलमानो! फ़ित्ने का अर्थ: प्रश्न एवं परीक्षण है, यहां क़ब्र के फ़ित्ने का अर्थ वो ३ प्रश्न हैं जो मृत्यु व्यक्ति से पूछे जाते हैं: तुम्हारा पालनहार कौन है? एवं तुम्हारा धर्म क्या है? तुम्हारे दूत कौन हैं? यदि मृत्यु व्यक्ति धर्मनिष्ठ होगा तो प्रश्न व उत्तर के समय अल्लाह तआ़ला उसे स्थिरता प्रदान करेगा, एवं सहीह उत्तर देने की शक्ति देगा, एवं यदि वह दुष्कृत्य होगा तो उसे सहीह उत्तर देने की शक्ति नहीं मिलेगी, एवं वह प्रकोप को झेलेगा, अल्लाह का शरण।

क़ब्र में मृत्यु से प्रश्न किए जाने के स्थित होने के संबंध में तीन हदीसें हैं: ●प्रथम: बुख़ारी ने क़तादा से एवं उन्होंने अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: व्यक्ति को जब क़ब्र में रखा जाता है, एवं जनाज़े में उपस्थित होने वाले व्यक्तिगण उस से प्रस्थान कर जाते हैंः तो वह अभी उनके जूतों की ध्वनि सुन रहा होता है कि दो देवदूत (मुनकर नकीर) उसके निकट आ जाते हैं, वह उसे बिठा कर पूछते हैं: उस व्यक्ति अर्थात: मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबंध में तुम्हारी क्या आस्था थी, विश्वासी तो कहेगा कि मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के दास एवं दूत हैं, इस उत्तर पर उस से कहा

जाएगा कि तू यह देख अपना नरक का ठिकाना, परंतु अल्लाह तआ़ला ने इसके बदले में तुम्हारे हेतु स्वर्ग में ठिकाना दिया है, उस समय उसे स्वर्ग एवं नरक दोनों ठिकाने प्रदर्शित कराए जाएंगे और पाखंडी एवं काफ़िर से जब पूछा जाएगा कि उस व्यक्ति के संबंध में तू क्या कहता था? तो वह कहेगा: मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं, मैं भी वही कहता था जो अन्य व्यक्तिगण कहते थे, फिर उससे कहा जाएगा: ना तूने उसे अवगत होने का प्रयास किया, एवं ना ही बुद्धिमान व्यक्तिगण के मार्ग को अपनाया, फिर उसे लोहे के सोंटे से बहुत ही शक्ति के साथ मारा जाएगा कि वह चिल्ला उठेगा, उसकी इस तीव्र ध्वनि मनुष्यों एवं जीन्नों के अतिरिक्त आस-पास (हाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने फ़तहुल्-बारी में जो बात लिखी है उस से ज्ञात होता है कि इसका अर्थ पशु हैं, क्योंकि मुसनद बज़्ज़ार में अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस आई है: उस की तीव्र ध्वनि को मनुष्यों एवं जीन्नों के अतिरिक्त संपूर्ण पशु सुनेंगे।) की संपूर्ण सृष्टि सुनेगी।

(बुख़ारी: १३७४)

●मृत्यु से क़ब्र में प्रश्न किए जाने का द्वितीय साक्ष्य: बराअ बिन आ़ज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस है: विश्वासी मृत्यु के निकट दो देवदूत प्रकट होते हैं, उसे बिठाते हैं एवं प्रश्न करते हैं: तुम्हारा पालनहार (पूज्य) कौन है? तो वह कहता है: मेरा पालनहार (पूज्य) अल्लाह है, फिर वो दोनों उनसे पूछते हैं? तुम्हारा धर्म क्या है? वह कहता है: मेरा धर्म इस्लाम है, फिर पूछते हैं: यह कौन हैं जो तुम्हारे बीच अवतरित किए गए? वह कहता है:

वह अल्लाह के दूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, फिर वो कहते हैं: तुम्हें यह कहां से ज्ञात हुआ? वह कहता है: मैंने अल्लाह की पुस्तक का सस्वर पाठ किया, उस पर विश्वास किया एवं उसको सत्य समझा। फिर पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: मेरे दास ने सत्य कहा इस कारणवश उसके हेतु स्वर्ग का बिछावना बिछा दो, उसे स्वर्ग का वस्त्र पहना दो एवं उसके हेतु स्वर्ग की ओर का एक द्वार खोल दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "फिर स्वर्ग का वायु एवं उसकी सुगंध आने लगती है, एवं दृष्टि की अंतिम सीमा तक उसके क़ब्र को विशाल कर दिया जाता है"। फ़रमाया: उसके निकट एक अति सुंदर मनुष्य आता है, वह सुंदर वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से सुगंध फूट रही होती है, वह कहता है: "तुम्हारे हेतु ऐसे उपहारों का शुभ समाचार है जिस से तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी, यही वह दिवस है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था, वह से कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा लाभों का उपहार लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा पुण्य-कर्म हूं। वह व्यक्ति कहता है: हे पालनहार! क़यामत प्रकट कर दे ताकि मैं अपने परिवार एवं अपने धन संपत्ति की ओर लौट जाऊं।

एवं रहा काफ़िर तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी मृत्यु का उल्लेख करते हुए फ़रमाया: उसके निकट दो देवदूत आते हैं, उसे उठाते हैं एवं पूछते हैं: तुम्हारा पालनहार कौन है? वह कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, फिर वह दोनों उससे प्रश्न करते हैं: यह व्यक्ति कौन हैं? वह

कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, फिर वह दोनों उससे पूछते हैं? तुम्हारा धर्म क्या है? वह कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, तो पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: उसने असत्य बात कही, उसके हेतु नरक का बिछावना बिछा दो, उसके हेतु नरक की ओर का द्वार खोल दो, तो उसकी तपन एवं विषैला वायु (लपट) आने लगती है, एवं उसकी क़ब्र संकीर्ण कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां इधर से उधर हो जाती हैं, फिर उसके निकट एक कुरूप व्यक्ति आता है, जो भद्दा वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से दुर्गंध फूटती रहती है, वह कहता है: तुझे बुरे यातना का शुभ समाचार दिया जाता है, यही वह दिवस है जिसका तुझे वचन दिया जाता था, वह कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा बुराइयों का संदेश लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा दुष्ट-कर्म हूं, वह कहता है ए पालनहार क़यामत प्रकट मत कर।

(इसे इमाम अहम ने मुसनद: ४/२८७ की एक लंबी हदीस में रिवायत किया है, इनके अतिरिक्त अबू दाऊद: ४७५३ ने भी रिवायत किया है एवं मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह स्थित किया है एवं कहा है कि इसकी प्रतिलिपि करने वाले सहीह के रुवात हैं, इसी प्रकार अल्-बानी ने सहीहुल्-जामेअ़: १६७६ एवं मिशकातुल्- मसाबीह: १६३० में इसे सहीह कहा है।)●मृत्यु से क़ब्र में प्रश्न किए जाने का तीसरा साक्ष्य: सहीह बुख़ारी की यह रिवायत है, आ़इशा रज़ि अल्लाहु अन्हा उल्लेख करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ... मुझ पर यह वह्य की गई है

कि तुम लोगों का क़ब्र में परिक्षण लिया जाएगा, दज्जाल जैसी परीक्षा (आज़माइश) के आस-पास। तुम में से प्रत्येक के निकट (अल्लाह के देवदूत) भेजे जाएंगे एवं उससे कहा जाएगा: तुम्हारा उस व्यक्ति (अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के संबंध में क्या विचार है? फिर मोमिन अथवा विश्वासी व्यक्ति कहेगा: मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सत्य दूत हैं, वह हमारे निकट स्मृति-चिन्ह एवं दिशा-निर्देश का प्रकाश लेकर आए, हमने (उसे) स्वीकार किया, विश्वास किया एवं (आपकी) आज्ञा की। फिर उससे कहा जाएगा: तू सो जा, तू एक पुण्य-कर्म करने वाले पुरुष की स्थिति में है एवं हमें ज्ञात है कि तू विश्वासी है, और प्रत्येक स्थिति में (बह्र हाल) पाखंडी अथवा शंकाशील व्यक्ति मुझे याद नहीं की असमा ने है कौन सा शब्द प्रयोग किया, (जब उस से प्रश्न किया जाएगा) तो वह कहेगा: मुझे (कुछ भी) ज्ञात नहीं, मैंने लोगों से जो कहते हुए सुना वह मैंने भी कह दिया। [इसे बुख़ारी: १०५३ ने रिवायत किया है, (मोमिन अथवा विश्वासी) (पाखंडी अथवा शंकाशील) में शंका हिशाम बिन उ़रवह से आया है।]

यह तीनों हदीसें है इस बात पर साक्ष्य हैं कि मृत्यु व्यक्ति से क़ब्र में प्रश्न किया जाएगा, परंतु अल्लाह तआ़ला विश्वासी को स्थिरता प्रदान करेगा एवं उसे सहीह उत्तर देने की शक्ति देगा, चाहे वह पापी ही क्यों न हो, अल्लाह का कथन है:

﴿يُثَبِّت الله الذين آمنوا بالقول الثابت في الحياة الدنيا وفي الآخرة﴾

अर्थात: अल्लाह तआ़ला विश्वावासियों को पक्की बात के साथ शक्तिशाली रखता है, सांसारिक जीवन में भी एवं प्रलोक में भी।

रही बात काफ़िरों एवं पाखंडियों की तो वो प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएंगे इस कारणवश अल्लाह तआ़ला उनके साथ वही व्यवहार करेगा जिसके वो पात्र हैं।

●ए मोमिनो! प्रलय के दिवस में विश्वास रखने के संबंध में द्वितीय विषय है; क़ब्र की यातना एवं उसका उपहार, इसका साक्ष्य ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु अन्हू की यह हदीस है, वह रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यदि यह संदेश ना होता कि तुम (अपने मृत्यु गण) का अंतिम संस्कार नहीं करोगे, तो मैं अल्लाह से प्रार्थना करता क़ब्र के जिस प्रकोप (की ध्वनियां) मैं सुन रहा हूं वह तुम्हें भी सुना दे, फिर आपने अपना मुखड़ा हमारी ओर किया और फ़रमाया: "अग्नि के प्रकोप से अल्लाह का शरण मांगो।" सब ने कहा: हम अग्नि के प्रकोप से अल्लाह के शरण में आते हैं, फिर आपने फ़रमाया: "क़ब्र की यातना से अल्लाह का शरण मांगो।" सब ने कहा हम क़ब्र के प्रकोप से अल्लाह के शरण में आते हैं, फिर आपने फ़रमाया: "प्रत्येक प्रकार के परीक्षणों से; जो उस में प्रदर्शित हैं एवं जो अदृश्य हैं अल्लाह का शरण मांगो"। सब ने कहा: हम परीक्षणों से; जो प्रदर्शित हैं एवं अदृश्य हैं अल्लाह के शरण में आते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दज्जाल के परीक्षणों से अल्लाह का शरण मांगो"।

(मुस्लिम: २८६७)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई नमाज़ में तशह्हुद पढ़े तो चार चीज़ों से शरण मांगे:

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ»

अर्थात: हे अल्लाह! मैं तेरा शरण मांगता हूं नरक एवं क़ब्र की यातना से, जीवन एवं मृत्यु की यातना से, और दज्जाल के परीक्षण से"।

इसे बुख़ारी: १३७७ एवं मुस्लिम: ५८८ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)●अल्लाह के दासो! क़ब्र की यातना दो प्रकार के व्यक्तियों को दी जाएगी, पापी विश्वासियों एवं काफ़िरों को, पापी विश्वासियों का साक्ष्य: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की यह हदीस है, वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुआ, इन दोनों क़ब्रों के मृत्यु को यातना दी जा रही है, एवं यह भी किसी महत्वपूर्ण कारण से नहीं हो रहा है, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हां! इन में से एक व्यक्ति चुग़ली करता था एवं द्वितीय वह व्यक्ति है जो मूत्र से बचने में सतर्क (अर्थात मूत्र के छींटे से बचने में लापरवाही करता था जिस कारणवश उसके वस्त्र मूत्र की गंदगी से अपवित्र हो जाते थे।) नहीं रहता था।

(इसे बुख़ारी: २१६ एवं मुस्लिम: २९२ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

ज्ञात हुआ कि चुग़ली खाना एवं मूत्र से ना बचना महा पापों में से है, एवं यह दोनों पापी अपने पाप के अनुसार क़ब्र में यातना के योग्य हैं ताकि उन्हें उनके पापों से पवित्र एवं स्वच्छ किया जा सके, इसी प्रकार इनके अतिरिक्त और भी पाप हैं जिनके अनुसार (मनुष्य को) क़ब्र में यातना दी जाएगी, क्योंकि क़ब्र यातना एवं उपहार का स्थान है।

●काफ़िरों को क़ब्र की यातना देने पर दूसरा साक्ष्य अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ والملائكة بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُواْ أَنفُسَكُمُ **الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ** عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ﴾

अर्थात: एवं यदि आप उस समय देखें जब ये क्रूर व्यक्तिगण मृत्यु की कठिनाइयों में होंगे एवं देवदूत अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे कि हां अपनी प्राणें निकालो। आज तुम्हें निरादर यातना दी जाएगी, वह इस कारणवश की तुम अल्लाह के संबंध में असत्य बातें कहते थे एवं उसके श्लोकों के साथ अभिमान करते थे।

●इस कारणवश अल्लाह का कथन (ٱلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ**) इस बात पर साक्ष्य है कि उन्हें तुरंत ही यातना दी जाएगी।**

●अल्लाह ने फ़िरऔनियों के संबंध में फ़रमाया:

﴿النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آل فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾

अर्थात: यह अग्नि है जिसके समक्ष प्रत्येक प्रातः एवं सांय ये लाए जाते हैं, एवं जिस दिन प्रलय प्रकट होगा, (आदेश होगा कि) फ़िरऔनियों को अत्यंत कठोर यातना में डालो।

अल्लाह का कथन: ﴿غدوا وعشيا﴾ **का अर्थ यह है कि प्रलय के प्रकट होने से पूर्व। क्योंकि इसके पश्चात फ़रमाया:**

﴿ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آل فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾

इस कारणवश प्रलय के दिन से पूर्व की यातना की एवं उसके पश्चात की यातन में अंतर का उल्लेख किया गया है।●रही बात क़ब्र के उपहारों की तो यह सत्य विश्वासियों हेतु है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَــــزلُ عَلَيْهِمُ الْمَلائِكَةُ أَلاَّ تَخَافُوا وَلا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ﴾

अर्थात: (वास्तव में) जिन व्यक्तिगण ने कहा हमारा पालनहार अल्लाह है, फिर उसी पर स्थित रहे, उसके निकट देवदूत (यह कहते हुए आते हैं कि कुछ भी भय एवं शोक ना करो) बल्कि उस स्वर्ग का शुभ संदेश सुन लो जिसका तुम्हें वचन दिया गया।

इस श्लोक से तर्क का आधार अल्लाह का यह कथन है जो स्वर्गदूतों द्वारा कहा गया: (وَأَبۡشِرُواْ بِٱلۡجَنَّةِ**) (अर्थात: स्वर्ग का शुभ संदेश सुन लो।) यह उस समय कहा जाता है जब आत्मा निकाली जाती है। इस कारणवश मृत्यु के**

समय आत्मा निकालते हुए यह शुभ संदेश देना उपहारस्वरूप माना जाता है। और यही अस्थान तर्क का आधार है।

●क़ब्र में मिलने वाले उपहारों पर क़ुरआन से साक्ष्य अल्लाह का कथन है:

﴿**فَلَوْلا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ** * وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ * وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَكِن لاَّ تُبْصِـرُونَ * فَلَوْلا إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ * تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ * فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ * فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّةُ نَعِيمٍ﴾

अर्थात: जबकि आत्मा कंठ तक पहुंच जाए, और तुम उस समय नेत्रों से देखते रहो, हम उस व्यक्ति की तुलना में तुम से अधिक निकट रहते हैं, परंतु तुम दर्शन नहीं कर सकते, इस कारणवश यदि तुम किसी के अधीन नहीं हो एवं तुम अपने प्रवचन में सत्य हो तो (थोड़ा) तुम इस आत्मा को लौटाओ, जो कोई अल्लाह के द्वार के निकट होगा उसके हेतु शांति, आहार एवं शांतिपूर्ण स्वर्ग है।

●इस श्लोक से तर्क का आधार यह है कि (जब आत्मा कंठ तक पहुंच जाए) उस समय शांति आहार एवं सुखो वाले स्वर्ग का शुभ संदेश दिया जाता है, जैसा कि उपरोक्त श्लोक से ज्ञात होता है, यह इस बात का साक्ष्य है कि मनुष्य को जो उपहार मिलने वाला होता है मृत्यु के समय से ही वह प्रारंभ हो जाता है एवं यह क़ब्र का सर्वप्रथम उपहार है।

●क़ब्र में मिलने वाले उपहारों पर क़ुरआन से एक साक्ष्य यह भी है अल्लाह का कथन है:

﴿كذلك يجزي الله المتقين * الذين تتوفاهم الملائكة طيبين يقولون سلام عليكم **ادخلوا الجنة** بما كنتم تعملون﴾

अर्थात: धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को अल्लाह इसी प्रकार बदला देता है, वो जिनकी आत्माएं देवदूत इस परिस्थिति में निकालते हैं कि वो पवित्र एवं स्वच्छ हों, कहते हैं कि तुम्हारे लिए तो शांति ही शांति है, जाओ स्वर्ग में अपने उन पुण्य-कर्मों के बदले जो तुम करते थे।

●इस श्लोक से तर्क का आधार यह है कि अल्लाह देवदूतों के माध्यम से विश्वासियों को उनकी मृत्यु के समय कहता है (ٱدۡخُلُواْ ٱلۡجَنَّةَ**) (स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।)**

●आत्मा निकलने से पूर्व ही विश्वासियों को उपहार का शुभ संदेश दे दिया जाता है, इसका साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿يا أيتها النفس المطمئنة * ارجعي إلى ربك راضية مرضية * فادخلي في عبادي * وادخلي جنتي﴾.

अर्थात: ए संतुष्ट आत्मा! तू अपने पालनहार की ओर चल इस स्थिति में की तुम अल्लाह से एवं वो तुम से प्रसन्न हो, इस कारणवश तुम मेरे विशेष दासों में प्रवेश कर जा, एवं मेरे स्वर्ग में चली जा।

●हदीस से इस बात पर साक्ष्य कि आत्मा निकलने से पूर्व ही विश्वासियों को उपहार का शुभ संदेश दे दिया जाता है, बराअ बिन आ़ज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हू की उपरोक्त हदीस है, उसमें उल्लेख हुआ है कि दो देवदूत विश्वासी से कहते हैं उस समय जब वह क़ब्र में प्रश्नों का सफ़लतापूर्वक उत्तर दे

देता है, (ए शांतिपूर्ण आत्मा! अल्लाह की क्षमा/मुक्ति एवं प्रसन्नता की ओर चली जा।) इस कारणवश आत्मा प्रसन्न हो जाती है एवं सरलता पूर्वक शरीर से निकल जाती है, फिर फ़रमाया: फिर पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: मेरे दास ने सत्य कहा इस कारणवश उसके हेतु स्वर्ग का बिछावना बिछा दो, उसे स्वर्ग का वस्त्र पहना दो एवं उसके हेतु स्वर्ग की ओर का एक द्वार खोल दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "फिर स्वर्ग का वायु एवं उसकी सुगंध आने लगती है, एवं दृष्टि की अंतिम सीमा तक उसके क़ब्र को विशाल कर दिया जाता है।" फ़रमाया: उसके निकट एक अति सुंदर मनुष्य आता है, वह सुंदर वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से सुगंध फूट रही होती है, वह कहता है: "तुम्हारे हेतु ऐसे उपहारों का शुभ समाचार है जिस से तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी, यही वह दिवस है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था, वह से कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा लाभों का उपहार लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा पुण्य-कर्म हूं। वह व्यक्ति कहता है: हे पालनहार! क़यामत प्रकट कर दे ताकि मैं अपने परिवार एवं अपने धन संपत्ति की ओर लौट जाऊं।

(इसे इमाम अहम ने मुसनद: ४/२८७ की एक लंबी हदीस में रिवायत किया है, इनके अतिरिक्त अबू दाऊद: ४७५३ ने भी रिवायत किया है एवं मुसरत के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह स्थित किया है एवं कहा है कि इसकी प्रतिलिपि करने वाले सहीह के रुवात हैं, इसी प्रकार अल्-बानी ने

सहीहुल्-जामेअ़: १६७६ एवं मिशकातुल्- मसाबीह: १६३० में इसे सहीह कहा है।)

●अल्लाह के दासो! क़ब्र के परीक्षणों उसकी यातना एवं उपहार को स्थित करने हेतु किताब-व-सुन्नत के यह कुछ साक्ष्य हैं जिनका उल्लेख हुआ, इसका विरोध केवल भटका हुआ व्यक्ति कर सकता है।

●अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد**!**

प्रशंसा ओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भयभीत रहे एवं यह ज्ञात रखें कि प्रलय के दिन में विश्वास रखने के अनेक लाभ हैं (उपदेश का यह पाठ इब्न-ए-उ़सैमीन रहिमहुल्लाह की पुस्तक: शरहुसलासतिल्-उसूल, पृष्ठ संख्या: १०५ से प्रतिलिपि की गई है।) उनमें से कुछ महत्वपूर्ण लाभ निम्नलिखित हैं:

१. उस दिन के उपहार की आशा में आज्ञाकारी की ओर आकर्षित होना एवं उसके हेतु प्रबंध करना।

२. उस दिन के यातना की भय से पाप करने एवं उस पर सहमति से वंचित रहना।

३. विश्वासी संसार के जिस उपहार से वंचित रहते हैं उनकी भरपाई हेतु प्रलय के दिन के उपहार एवं सवाब की आशा करके मन को संतुष्ट करना।

४. अल्लाह की न्याय से अवगत होना वह इस प्रकार कि अल्लाह उनके कर्मों का बदला देगा, यदि कर्म पुण्य का होगा तो लाभ भी अच्छा मिलेगा एवं यदि कर्म दुष्ट होगा तो उसका बदला भी बुरा होगा।

५. अल्लाह की बुद्धिमत्ता का ज्ञान रखना इस प्रकार कि अल्लाह ने दासों को निराधार प्रकट नहीं किया, बल्कि उन्हें महान बुद्धिमत्ता के कारण प्रकट किया जो कि उसकी उपासना है, वह इस प्रकार कि वो संपूर्ण आज्ञाओं एवं उपासनाओं को पूरा करें, एवं प्रत्येक प्रकार के अवैध चीज़ों से वंचित रहें, फिर अल्लाह तआ़ला इस आधार पर प्रलोक में उनका लेखांकन करने वाला है।

●हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं नरक एवं क़ब्र की यातना से, जीवन एवं मृत्यु की यातना से और दज्जाल के परीक्षण से।

●हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं एवं ऐसी कथनी और करनी की जो स्वर्ग से निकट कर दे, एवं नर्क से तेरा शरण चाहते हैं एवं ऐसी ही कथनी और करनी से जो नरक से निकट कर दे।

●हे अल्लाह! हमें अपना प्रेम एवं उस प्रत्येक कर्म का प्रेम प्रदान कर जो हमें तुझ से निकट कर दे।

●हे अल्लाह हम ने स्वयं को बहुत ही हानि पहुंचाया है यदि तू क्षमा ना करेगा एवं हम पर कृपा नहीं करेगा तो वास्तव में हम हानि प्राप्त करने वाले हो जाएंगे।

●हे अल्लाह! हमारे संपूर्ण पापों को क्षमा कर दे, चाहे वो बड़ा हो अथवा छोटा, पूर्व का हो अथवा पश्चात का एवं प्रदर्शित हो अथवा अदृश्य।

●हे हमारे पालनहार हमें सांसारिक जीवन में पुण्य दे एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर और नरक की यातना से हमें सुरक्षित रख।

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

अनुवादः

तारिक़ बदर

binhifzurrahman@gmail.com